बी ए पार्ट -3 , इतिहास (ऑनर्स), पत्र – 5

वर्ष 2020 की वार्षिक परीक्षा हेतु महत्वपूर्ण प्रश्न

संथाल विद्रोह

- प्रो० नूतन गुप्ता
इतिहास विभाग, कमला राय महाविद्यालय, गोपालगंज,
जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

संथाल विद्रोह ब्रिटिश शासनकाल में ज़मींदारों तथा साहूकारों द्वारा किये जाने वाले अत्याचारों के ख़िलाफ़ आदिवासियों द्वारा किया गया विद्रोह था। आदिवासियों के विद्रोहों में संथालों का यह सबसे सशक्त विद्रोह था।

वर्ष 1955 ई० में बंगाल के मुर्शिदाबाद तथा बिहार के भागलपुर जिलों में स्थानीय जमीनदार, महाजन और अंग्रेज कर्मचारियों के अन्याय अत्याचार के शिकार पहाड़िया जनता ने एकबद्ध होकर उनके विरुद्ध विद्रोह का बिगुल फूँक दिया था। इसे **पहाड़िया विद्रोह** या **पहाड़िया जगड़ा कहते हैं। पहाड़िया भाषा में 'जगड़ा शब्द का शाब्दिक अर्थ है-'विद्रोह'। यह अंग्रेजों के विरुद्ध प्रथम सशस्त्र जनसंग्राम था। जावरा पहाड़िया उर्फ तिलका मांझी , भाइयों ने इस विद्रोह का** नेतृत्व **किया था** तथा **शाम टुडू (परगना) के मार्गदर्शन** में **यह विद्रोह** किया गया था। **1793 में लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा आरम्भ किए गए स्थाई बन्दोबस्त के कारण जनता के ऊपर बढ़े हुए अत्याचार इस विद्रोह का एक प्रमुख कारण** था।**यद्यपि अंग्रेज कैप्टन अलेक्ज़ेंडर ने विद्रोह का दामन कर दिया। किन्तु संथाल विद्रोह** ने भारतीयों खासकर आदिवासियों के मन में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध जो आग लगाइ, वह भारत की आजादी के बाद ही शांत हुई।

आदिवासी लोग राजमहल की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द रहा करते थे। वे जंगल की उपज से अपनी गुजर-बसर करते थे और झूम खेती किया करते थे। वे जंगल के छोटे-से हिस्से में झाड़ियों को काटकर और घास-फूँस को जलाकर जमीन साफ कर लेते थे आरै राख की पोटाश से उर्वर बनी जमीन पर ये लोग अपने खाने के लिए तरह-तरह की दालें और ज्वार-बाजरा **आदि उपयोगी अनाज़** उगा लेते थे। कुछ वर्षो तक उस साफ की गई जमीन में खेती करते थे और फ़िर उसे कुछ वर्षो के लिए परती छोड़ कर नए इलाके में चले जाते थे जिससे कि उस जमीन में खोई हुई उर्वरता फ़िर से उत्पन्न हो जाती थी।

इस प्रकार, संथाल विद्रोह ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था के विरुद्ध प्रथम व्यापक सशस्त्र विद्रोह था. यह विद्रोह 1855 में प्रभावी हुआ तथा 1856 में इसका दमन कर दिया गया.इस विद्रोह का केंद्र भागलपुर से लेकर राजमहल की पहाड़ियों तक था. इस विद्रोह का मूल कारण अंग्रेजों के द्वारा जमीदारी व्यवस्था तथा साहूकारों एवं महाजनों के द्वारा शोषण एवं अत्याचार था. इस **विद्रोह का नेतृत्व सिद्धू, कान्हू, चांद और भैरव में किया था.**

संथाल, **दामन ए कोह** नामक क्षेत्र में निवास करने वाले आदिवासी थे. वे उस क्षेत्र में अपनी परंपरागत व्यवस्था एवं अपनी सामाजिक, आर्थिक व्यवस्थाओं के तहत शांतिपूर्ण तरीके से जीवन यापन कर रहे थे. संथालों का अपना राजनीतिक ढांचा भी था. **परहा पंचायत** के द्वारा सारे क्षेत्रों पर उनके प्रतिनिधियों के द्वारा शासन किया जाता था . परहा पंचायत के सरदार हमेशा संथालों के हितों की रक्षा का ख्याल रखते थे.वे गांव के लोगों से लगान वसूलते थे तथा उसे एक साथ राजकोष में जमा करते थे.धार्मिक अनुष्ठानों के लिए भी वे अपने लोगों से ही पुरोहित या पाहन का चुनाव करते थे.इस क्षेत्र में अंग्रेजो के द्वारा किए गए शोषण एवं अत्याचार के कारण विद्रोह प्रारंभ हुआ.

विद्रोह के कारण-

अंग्रेजों की जमींदारी व्यवस्था – अंग्रेजों की शोषणकारी, जमींदारी व्यवस्था के विरुद्ध आदिवासियों के मन में घोर असंतोष की भावना थी। इसके अलावा विद्रोह के महत्वपूर्ण कारण निम्नलिखित थे -

1. संथाली क्षेत्र में अंग्रेजों का आगमन
2. भू राजस्व का ऊँचा दर
3. जमीन हड़प की ब्रिटिश नीति

तात्कालिक कारण - भागलपुर से वर्धमान के बीच रेल परियोजना में संथालो से बेगारी करवाना इस विद्रोह का **तात्कालिक कारण** था.

साहूकारों का अत्याचार – ब्रिटिश के एजेंट के रूप साहुकार लोग भी आदिवासियों का काफी शोषण करने लगे थे। इसके विरूद्ध संथालों के अंदर विद्रोह की भावना बलवती होने लगी, जो संथाल विद्रोह का एक महत्वपूर्ण कारण बना।

विद्रोह का निर्णय – 30 जून 1855 को **भगनीडीह** में संथालों ने विद्रोह करने का निर्णय लिया.

उद्देश्य – इस विद्रोह का मुख्य उद्देश्य **बाहरी लोगों को भगाना, विदेशियों का राज हमेशा के लिए समाप्त करना तथा न्याय व धर्म का राज स्थापित करना था.**

विद्रोह का विस्तार –

- संथालों ने महाजनों एवं जमींदारों पर हमला शुरू किया.
- साहूकारों के मकानों को उन दस्तावेजों के साथ जला दिया गया जो गुलामी के प्रतीक थे.
- पुलिस स्टेशन, रेलवे स्टेशन और डाक ढोने वाली गाड़ियों को जला दिया गया.
- रेलवे इंजीनियर के बंगलों को जला दिया गया.

- फसल जला दिए गए.

विद्रोह का दमन

- इस संगठित विद्रोह को कुचलने के लिए सेना का सहारा लिया गया.
- मेजर जनरल बरो के नेतृत्व में सेना की टुकडिया भेजी गई.
- उपद्रव ग्रस्त क्षेत्र में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया और विद्रोही नेताओं की गिरफ्तारी के लिए इनामों की भी घोषणा की गयी.
- लगभग 15000 संथाल मारे गए. गांव के गांव उजाड़ दिए गए.
- सिद्धू और कान्हो को पकड़ लिया गया.

विद्रोह का स्वरूप

जातीय विद्रोह

- संथालों का विद्रोह एक जातीय विद्रोह था जो मूलतः जाति एवं धर्म के नाम पर संगठित किया गया था.
- उनमे वर्ग भावना का संचार नहीं हुआ था.
- उन्होंने जातीय आधार पर अपनी पहचान बनाई थी.

सुसंगठित आंदोलन

- संथाल विद्रोह एक संगठित आंदोलन था जिसमें करीब 60000 से ज्यादा लोगों को एकजुट किया.

सशस्त्र विद्रोह

- संथाल विद्रोह एक सशस्त्र क्रांति के रूप में प्रकट हुआ था.
- इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य की सुनियोजित सत्ता से टकराना था.
- विद्रोहियों के हथियार परंपरागत एवं दकियानूसी था. वह तीर धनुष एवं भाले का प्रयोग करते थे. जबकि ब्रिटिश सैनिक अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस थे.

सीमित क्षेत्र

- यह एक स्थानीय आंदोलन था जिसके लिए बहुत सारे जातिगत एवं धर्मगत बातें जिम्मेदार थी.

परिणाम

- संथाल परगना नामक एक प्रशासनिक इकाई का गठन किया गया.
- संथाल परगना टेनेंसी एक्ट को लागु किया गया.
- अंग्रेजों तथा संथालो के बीच संवाद स्थापित करने के लिए ग्राम प्रधान को मान्यता दी गयी.
-

निष्कर्ष – इस प्रकार स्पष्ट है की संथाल विद्रोह औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध प्रथम सशस्त्र विद्रोह था. सिद्धू और कान्हो के नेतृत्व में किया गया यह संघर्ष भारत की आजादी के लिए एक मील का पत्थर साबित हुआ।

धन्यवाद।